भारत में पारिवारिक संरचना का बदलता स्वरूप

परिवार, विश्व के अधिकांश हिस्सों में विशेष रूप से भारत में, समाज की एक मूलभूत संस्था रहा है। हालांकि आंतरिक संगठन; स्वायत्तता के स्तर तथा प्रतिबंधों और वर्जनाओं जैसी विशेषताओं के आधार पर परिवार अलग-अलग तरह के होते हैं। इन्हीं विशेषताओं के आधार पर इसे संरक्षित और कायम रखा जाता है। भारत में पारिवारिक संरचना के डायनेमिक्स में पिछले कुछ वर्षों में महत्वपूर्ण बदलाव हुए हैं। ये परिवर्तन परंपराओं, आधुनिकता, सामाजिक-आर्थिक कारकों और सांस्कृतिक बदलावों के बीच जटिल अंतर्संबंधों को दर्शाते हैं। ये परिवर्तन भारतीय समाज के भीतर होने वाले व्यापक संरचनात्मक बदलावों के प्रतीक हैं। साथ ही ये शहरीकरण, वैश्वीकरण, शैक्षिक प्राप्ति, लैंगिक भूमिकाओं में आने वाले बदलाव और प्रौद्योगिकीय प्रगति से भी प्रभावित हुए हैं।

इस डॉक्यूमेंट में हम निम्नलिखित पर चर्चा करेंगे:

1. परिवार से हम क्या समझते हैं? 2
2. भारत में अलग-अलग प्रकार की पारिवारिक संरचनाएं क्या हैं? 2
3. भारत में समय के साथ-साथ पारिवारिक संरचना में क्या परिवर्तन हुए हैं? 3
4. परिवर्तन के कारक- भारत में पारिवारिक संरचना को प्रभावित करने वाले कारक कौन-से हैं? 4
5. बदलती पारिवारिक संरचना का हाशिए पर रहने वाले समुदायों पर क्या प्रभाव पड़ा है? 6
   - 5.1. महिलाओं पर प्रभाव 6
   - 5.2. ट्रांसजेंडर्स पर प्रभाव 6
   - 5.3. बच्चों पर प्रभाव 6
6. भारत में पारिवारिक संरचना को आकार देने में शासन प्रणालियों की भूमिका 7
7. आगे की राह 8

निष्कर्ष 8

टॉपिक: एक नज़र में 9

बॉक्स, चित्र और टेबल 10

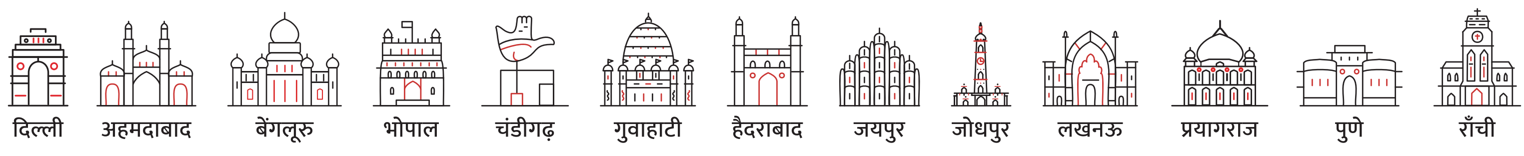

1. परिवार से हम क्या समझते हैं?

- परिवार शब्द लैटिन भाषा के शब्द **'फैमिलिया'** से उत्पन्न हुआ है। यह एक **घरेलू संस्था** को दर्शाता है। इसका तात्पर्य है **"अपने जीवनकाल के महत्वपूर्ण चरणों के दौरान एक साथ रहने वाले तथा जैविक और/ या सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक संबंधों द्वारा एक-दूसरे से जुड़े हुए व्यक्तियों का समूह"**।
- **किसी परिवार के चार प्रमुख कार्य:**
  - **शारीरिक कार्य:** यह वृद्धि, विकास और आराम/ स्वास्थ्य लाभ के लिए आवश्यक एक सुरक्षित व आरामदायक वातावरण प्रदान करके संपन्न किया जाता है।
  - **आर्थिक कार्य:** इसमें परिवार के सदस्यों को वित्तीय सहायता प्रदान करना, समाज की मौद्रिक आवश्यकताओं को पूरा करना शामिल होता है।
  - **प्रजनन संबंधी कार्य:** यह कार्य संतान पैदा करने से जुड़ा हुआ है।
  - **समाजीकरण संबंधी कार्य:** इसमें शिक्षण कार्य; विश्वास, मूल्य, दृष्टिकोण और सामाजिक अंतर्संबंध को बढ़ावा देना; प्रतिक्रिया देना तथा समस्या-समाधान का मार्गदर्शन करना शामिल होता है।

बॉक्स 2.1 भारतीय परिवार व्यवस्था

पारंपरिक परिवार की विशेषताएं

- आम तौर पर एक महिला व पुरुष आपस में विवाह करके एक साथ जीवनयापन करते हैं।
- सदस्यों के बीच श्रम का विभाजन होता है।
- आर्थिक एवं सामाजिक आदान-प्रदान होता रहता है।
- भोजन, निवास जैसी कई जरूरतें साझा की जाती हैं।
- बच्चों पर अधिकार तथा उनकी सुरक्षा, सहयोग और पालन-पोषण का दायित्व होता है।

2. भारत में अलग-अलग प्रकार की पारिवारिक संरचनाएं क्या हैं?

- भारत **वसुधैव कुटुंबकम** के दर्शन का पालन करता है। इसमें कुटुंब या परिवार को पारस्परिक-सामाजिक संबंधों की गतिशीलता में प्रधानता प्राप्त है। पश्चिमी समाज में "व्यक्तिवाद" को बढ़ावा दिया जाता है। इसके विपरीत **भारतीय समाज** का दृष्टिकोण **"सामूहिकतावादी"** है। यह **परस्पर निर्भरता, सामाजिक एकीकरण और सहयोग** को बढ़ावा देता है। परिवार इस सामाजिक संरचना का केंद्र बिंदु होता है।
  - **संयुक्त परिवार:** ऐतिहासिक रूप से संयुक्त परिवार ही भारत में पारंपरिक, आदर्श और वांछित परिवार माने जाते हैं। यह **पारिवारिक एकजुटता, पारिवारिक निष्ठा और पारिवारिक एकता** पर जोर देता है।
    - भारत की जनगणना (2011) के अनुसार देश में सभी तरह के परिवारों में विस्तारित और संयुक्त परिवार या कुटुंब की केवल **20 प्रतिशत हिस्सेदारी** है।
  - **एकल परिवार: इसके** तहत **आने वाले** कई शहरी परिवार **ग्रामीण विस्तारित या संयुक्त परिवारों के हिस्से** हैं।
    - जनगणना (2011) के अनुसार, सभी तरह के परिवारों में 70% एकल **परिवार** हैं।
  - **प्राधिकार:** आम तौर पर, भारत में परिवार **पितृसत्तात्मक विचारधारा** पर आधारित होते हैं। वंश परंपरा के तहत **पितृवंशीय (पुरुष वंश) नियम का पालन** किया जाता है। इसके अलावा, निवास भी पितृस्थानीय होता है अर्थात पत्नी शादी के बाद पति के घर रहने जाती है।
    - आमतौर पर, **घर का सबसे बड़ा पुरुष सदस्य** घर का मुखिया होता है और संयुक्त संपत्ति का प्रबंधन करता है।
    - हालांकि, **केरल में** और **कुछ अन्य समुदायों** में घर की सबसे बड़ी महिला सदस्य मुखिया होती है।
  - **लैंगिक भूमिकाएं:** भारत में पारंपरिक परिवार **परंपरागत लैंगिक भूमिकाओं को प्राथमिकता देने** का समर्थन करते हैं। इसके अनुसार, महिलाओं की भूमिका घरेलू काम-काज करना और बच्चों के पालन-पोषण तक सीमित है, जबकि पुरुष सदस्य आजीविका अर्जित करने, बाहरी मामलों को देखने, परिवार की सुरक्षा करने आदि दायित्वों को पूरा करते हैं।
  - **विवाह प्रणाली:** भारतीय समाज में अधिकतर **सजातीय विवाह** पर बल दिया जाता रहा है। इसमें आम तौर पर एक ही जाति में विवाह करने का प्रचलन होता है।
    - एकल **विवाह (Monogamy) इसके** तहत **कोई पुरुष या महिला** एक समय **में** एक **ही महिला या पुरुष से विवाह** कर **सकता/ सकती है।** यह भारत में विवाह का सर्वाधिक प्रचलित रूप है। हालांकि, कुछ समुदायों में **बहुपत्नी प्रथा** (एक पुरुष की एक से अधिक पत्नियां) और कुछ जनजातियों में बहुपतित्व प्रथा (एक महिला के एक से अधिक पति) का प्रचलन भी है।

3. भारत में समय के साथ-साथ पारिवारिक संरचना में क्या परिवर्तन हुए हैं?

टेबल 3.1. भारत में पारिवारिक संरचना में आए विविध परिवर्तन

मानदंड	भारत में पारंपरिक पारिवारिक संरचना	भारत की पारिवारिक संरचना में आए परिवर्तन
पारिवारिक व्यवस्था	▷ **संयुक्त परिवार व्यवस्था**	▷ **पारंपरिक संयुक्त परिवार प्रणाली का धीरे-धीरे लुप्त होना** और एकल परिवारों का बढ़ना।
प्राधिकार/ परिवार का मुखिया	▷ **पितृसत्तात्मक परिवार व्यवस्था,** जिसमें सबसे बड़ा पुरुष सदस्य परिवार का मुखिया होता है।	▷ हालांकि, अभी भी पितृसत्तात्मक व्यवस्था ही विद्यमान है, फिर भी **महिला मुखिया वाले परिवारों में वृद्धि** देखी जा सकती है।
विवाह संबंधी मानदंड	▷ विवाह को **पवित्र और जीवन भर का बंधन** माना जाता है। ▷ **अरेंज मैरिज का मानदंड:** इसमें जीवनसाथी के चयन पर ज्यादातर माता-पिता और बड़ों का विशेषाधिकार होता है। ▷ इसमें लोगों की शादी कम उम्र में ही हो जाती है तथा **बाल विवाह के मामले** भी बड़े पैमाने पर सामने आते हैं।	▷ अलग **होने और तलाक के मामलों** में वृद्धि हुई है। ▷ प्रेम विवाह का प्रचलन बढ़ रहा है, **अरेंज मैरिज में कमी आ रही है** और लोग स्वयं अपने जीवन साथी का चयन कर रहे हैं। ▷ बाल विवाह के मामलों में कमी आने के साथ-साथ **विवाह की औसत आयु में भी वृद्धि** हो रही है।
निर्णय लेना और विवाद	▷ इसमें रिश्तेदारी का संबंध अधिक मजबूत होता है और निर्णय मुख्य रूप से **परिवार के मुखिया** द्वारा लिए जाते हैं। ▷ **पारिवारिक झगड़ों के कम मामले** सामने आते हैं, क्योंकि परिवार के मुखिया का परिवार के सदस्यों पर निर्विरोध अधिकार होता है।	▷ **रिश्तेदारी के संबंधों में कमी** आ रही है तथा पारिवारिक मामलों में बच्चों और माता-पिता के बीच **निरंतर परामर्श द्वारा निर्णय** लिए जाते हैं। ▷ पति-पत्नी, माता-पिता और पुत्रों तथा भाइयों के बीच अधिक **तनाव व संघर्ष** देखे जा रहे हैं।
बच्चों को जन्म देना और उनकी देखभाल	▷ **कुल प्रजनन दर के उच्च स्तर** के साथ-साथ प्रति परिवार बच्चों की संख्या अधिक होती है। ▷ कम **आयु में गर्भधारण** और परिवार नियोजन। ▷ **बच्चों की देखभाल** पूरे परिवार की जिम्मेदारी होती है।	▷ 2019-21 के दौरान कुल **प्रजनन दर घटकर लगभग** 2 रह गई थी। ▷ **पहले गर्भधारण और परिवार नियोजन को टालने की प्रवृत्ति** बढ़ रही है। ▷ **बच्चों की देखभाल की जिम्मेदारियां** तेजी से पेशेवर लोगों को सौंपी जा रही हैं। बच्चों के **समाजीकरण के अभिकर्ता के रूप में परिवार की भूमिका कम** हो गई है।
लैंगिक भूमिका	▷ **पुत्र की चाह रखने वाला** व संतानोत्पत्ति को बढ़ावा देने वाला समाज होता है। ▷ सन-**मेटा परेफरेंस,** इसमें विवाहित जोड़े तब तक बच्चे पैदा करते रहते हैं, जब तक कि उनके पास वांछित संख्या में पुत्र नहीं हो जाते हैं। ▷ इसमें महिला सदस्य **सीमित शिक्षा** ही प्राप्त करती हैं और **घरेलू कामकाज तथा बच्चों की देखभाल में ही संलग्न** रहती हैं।	▷ परिवार में **बालिकाओं की स्वीकार्यता** बढ़ रही है। ▷ घर के बाहर **आर्थिक गतिविधियों और घर के भीतर निर्णय लेने में महिलाओं की भूमिका में वृद्धि** हो रही है। साथ ही, शिक्षा में भी उनकी भागीदारी बढ़ रही है।

4. परिवर्तन के कारक- भारत में पारिवारिक संरचना को प्रभावित करने वाले कारक कौन-से हैं?

- **औद्योगीकरण और शहरीकरण: औद्योगीकरण और शहरीकरण के कुछ प्रभाव निम्नलिखित हैं:**
    - **एकल परिवारों की संख्या बढ़ रही है।** दरअसल परिवार के अधिक-से-अधिक सदस्य संयुक्त पारिवारिक दायरे से दूर जा रहे हैं और अकेले या एकल इकाई के सदस्यों के रूप में रह रहे हैं।
    - रोजगार के अवसरों की तलाश में **औद्योगिक और शहरी क्षेत्रों की ओर प्रवास** हो रहा है। इससे शहरी क्षेत्रों के कुछ हिस्सों में **संयुक्त परिवारों का चलन** भी बढ़ा है।
    - अधिक शहरीकरण वाले राज्यों में **एकल** सदस्य वाले परिवारों का अनुपात अधिक होता है।
- **संस्कृति और पश्चिमीकरण:** वर्तमान में संस्कृति को पारिवारिक संरचना के निर्धारण की एक निषेधात्मक व्यवस्था के रूप में माना जा रहा है। यह परिवार के लिए सीमाएं निर्धारित करती है तथा व्यवहार के नियमों, बातचीत के तरीकों, स्वीकार्य प्रथाओं, अनुशासन और पदानुक्रम को तय करती है। **संस्कृति की इस नकारात्मक अवधारणा के अनेक प्रभाव देखने को मिलते हैं–**
    - निजता के अधिकार और स्वतंत्रता पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। पश्चिमी संस्कृति से प्राप्त विचारों को बढ़ावा मिलने से **एकल परिवारों के विकास में वृद्धि** हुई है।
    - बढ़ते व्यक्तिवाद और एकल परिवारों के बढ़ते चलन के कारण भारतीय परिवार प्रणाली में **सबसे बड़े पुरुष सदस्य के पारंपरिक अधिकार कम** हो रहे हैं।
    - समलैंगिक संबंधों और लिव-इन व्यवस्था जैसे **गैर-पारंपरिक** रिश्तों की स्वीकार्यता बढ़ रही है।
- **सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता:** शिक्षा और रोजगार के अवसरों तक बढ़ती पहुंच ने परिवार की गतिशीलता को विविध तरीकों से पुनर्गठित किया है।
    - श्रम बल में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी के कारण परिवार में निर्णय लेने के मामले में **महिलाओं की भूमिका में वृद्धि** हुई है।
    - युवाओं में **व्यक्तिवाद की तीव्र भावना बढ़ रही है** और वे परिवार के दायरे से बाहर समुदाय में अपनी स्थिति में सुधार करने का प्रयास कर रहे हैं।
- **वैश्वीकरण:** वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप पूरे देश में युवा आबादी का एक जगह से दूसरी जगह पर स्थानांतरण हुआ है। विशेष रूप से विकासशील देशों से विकसित देशों की ओर अधिक प्रवास हुआ है। इसके परिणामस्वरूप वस्तुओं, सेवाओं, संस्कृतियों और मूल्यों के आदान-प्रदान में भी वृद्धि हुई है।
    - **उपभोक्तावादी संस्कृति के बढ़ने** से भावनात्मक संबंध कमजोर हुए हैं। साथ ही, परिवार के कई युवा सदस्यों को **परिवार में पहचान के संकट** की भावना महसूस होती है।
    - प्रमुख कामकाजी आयु वाले परिवार के सदस्यों के प्रवास के कारण **परिवार के सदस्यों की देखरेख की जिम्मेदारी** युवा सदस्यों से बुजुर्ग सदस्यों पर स्थानांतरित हो जाती है।
    - पितृसत्तात्मक समाज में परिवार के पुरुष मुखिया की पारंपरिक रूप से निर्णय लेने की जिम्मेदारी में कमी आई है। विदेशी रोजगार के अवसरों के बढ़ने तथा महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार होने से इसे बढ़ावा मिला है।
- **जनसांख्यिकीय संक्रमण:** इसका प्रमुख परिणाम **जनसंख्या की आयु संरचना में परिवर्तन** होने से है। इसमें वयस्कों का अनुपात बढ़ रहा है तथा बच्चों और बुज़ुर्गों का अनुपात लगातार कम हो रहा है।

चित्र 4.1 परिवर्तन के कारक

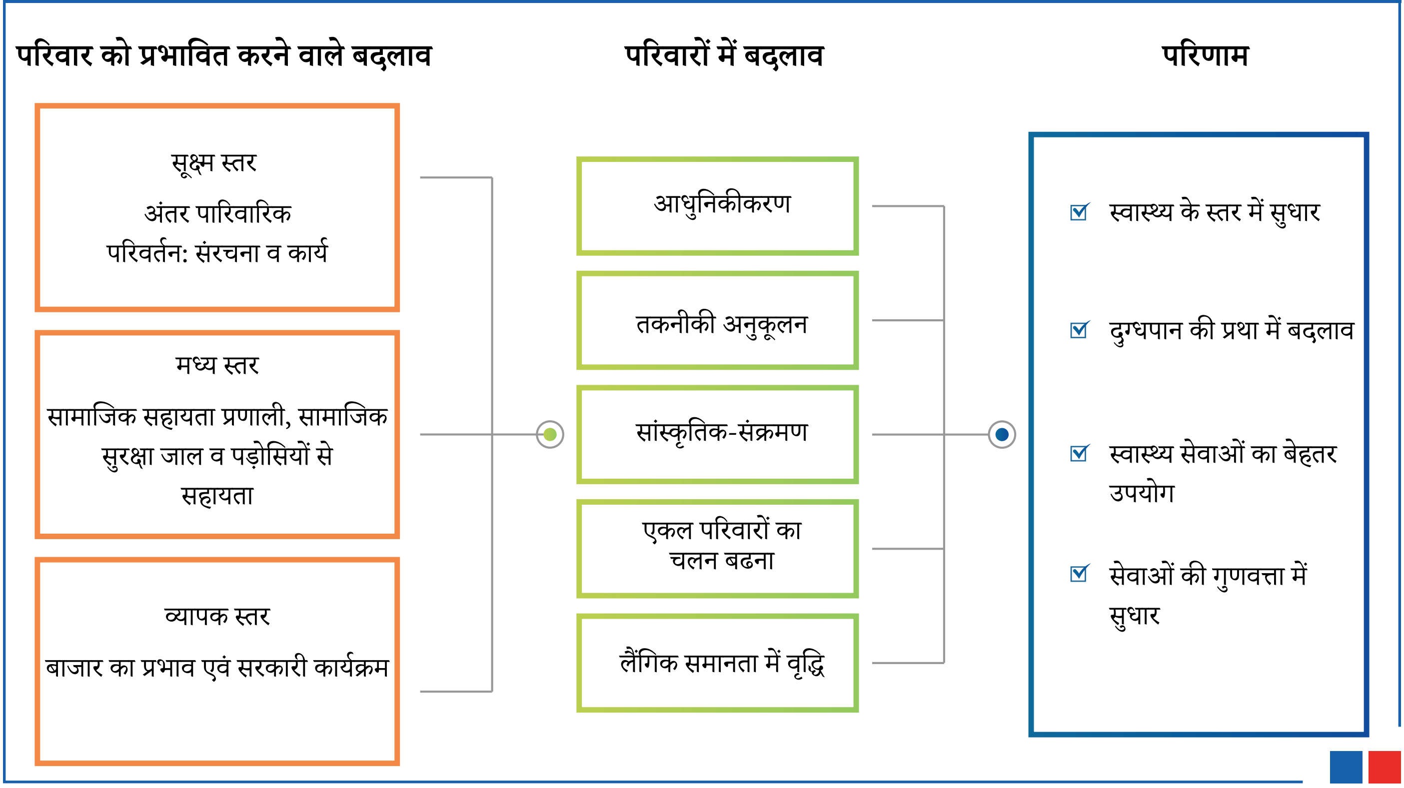

- बच्चों की संख्या में कमी आने से **संसाधनों की बचत** होती है तथा **सामाजिक-आर्थिक क्षेत्रों में अधिक निवेश** के अवसर मिलते हैं। इसी प्रकार, बुजुर्ग सदस्यों की बढ़ती संख्या से भी **बचत की प्रवृत्ति में कमी आने की संभावना** रहती है।
- व्यक्तिगत स्तर पर आए इन **परिवर्तनों के कारण परिवार की संरचना, व्यवहार, विकल्प, संसाधनों का अंतर-पीढ़ीगत हस्तांतरण व भावनात्मक सहयोग** प्रभावित हो रहे हैं।

- **प्रौद्योगिकी:** टेक्नोलॉजी ने परिवारों के बीच होने वाले संचार के पारंपरिक तरीकों में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया है।
  - इस प्रगति से भौगोलिक दूरियां अब किसी तरह की बाधा नहीं बनती हैं तथा **तीव्र संपर्क** की सुविधा उपलब्ध हो गई हैं। इससे अलग-अलग रह रहे परिवार के सदस्य आपस में हर समय जुड़े रहते हैं।
  - **पारंपरिक तरीके से आमने-सामने की बातचीत न होने से व्यक्तिगत बातचीत की गहराई और गुणवत्ता में गिरावट** आती है। इससे परिवारों के भीतर संघर्ष बढ़ सकता है।
  - तकनीकी उपकरण बच्चों में **सामाजीकरण और मूल्य संवर्धन के साधन के रूप में परिवार की भूमिका** का स्थान ले रहे हैं।

बॉक्स 4.1. एक छोटी सी वार्ता! पारिवारिक संरचना पर सोशल मीडिया का प्रभाव

विनय

विनी

हाय विनय, क्या तुमने देखा है कि सोशल मीडिया हमारे पारिवारिक संबंधों सहित हमारे जीवन के हर पहलू में अपनी जगह बना चुका है?

हां, चूंकि व्यक्तियों के समाजीकरण और समर्थन का प्राथमिक स्रोत परिवार है, इसलिए सोशल मीडिया का हमारे जीवन के उस पहलू को प्रभावित करना स्वाभाविक है।

अब जब मैं इसके बारे में सोचती हूं, तो इसने हमारे विस्तारित परिवारों के साथ कई स्तरों पर संवाद करने का साधन प्रदान करके परिवारों को हमारे जीवन के करीब ला दिया है। तुम क्या सोचते हैं?

मैं तुमसे सहमत हूं। छोटे परिवारों के आधुनिक युग में, सोशल मीडिया पारिवारिक बंधनों को बढ़ावा देने का मुख्य माध्यम बन गया है। लेकिन इसके अपने नुकसान भी हैं, है ना?

हां, सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग से अक्सर निकट पारिवारिक संबंधों की उपेक्षा हो सकती है और पारिवारिक संबंधों में तनाव आ सकता है।

ठीक है, यह आमने-सामने की बातचीत के आनंद और आकर्षण की जगह नहीं ले सकता, लेकिन क्या आज के बदलते समाज में यह जरूरी नहीं है?

मुझे ऐसा लगता है कि यह एक एक आवश्यकता बन गई है, क्योंकि परिवार के सदस्य एक-दूसरे से बहुत दूर रहते हैं तथा सोशल मीडिया संपर्क के लिए त्वरित और किफायती साधन प्रदान करता है।

जरूर। यह सब इस बात को लेकर है कि हम इसका उपयोग कैसे करते हैं तथा ऑनलाइन और ऑफलाइन इंटरैक्शन के बीच एक स्वस्थ संतुलन कैसे खोजते हैं।

बिल्कुल सही। परिवारों के लिए खुले तौर पर संवाद करना, सीमाएं निर्धारित करना और एक साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिताने को प्राथमिकता देना महत्वपूर्ण है, चाहे वह ऑनलाइन हो या ऑफलाइन। इस तरह, हम मजबूत पारिवारिक संबंध बनाए रखते हुए सोशल मीडिया का अधिकतम लाभ उठा सकते हैं।

5. बदलती पारिवारिक संरचना का हाशिए पर रहने वाले समुदायों पर क्या प्रभाव पड़ा है?

5.1. महिलाओं पर प्रभाव

- **स्वायत्तता में वृद्धि:** पारंपरिक संयुक्त परिवारों से एकल या गैर-पारंपरिक पारिवारिक संरचनाओं की ओर बढ़ने के परिणामस्वरूप अक्सर महिलाओं को **अधिक स्वायत्तता एवं अधिकार** प्राप्त होते हैं।
  - हालांकि, महिलाओं की स्वायत्तता का स्तर **आर्थिक स्थिति, जाति, क्षेत्र, धर्म आदि के आधार पर अलग-अलग** होता है। उदाहरण के लिए, अमीर संयुक्त परिवारों में महिलाओं को अंतर-घरेलू निर्णय लेने में अधिक स्वायत्तता होती है, लेकिन घर के बाहर आने-जाने की कम स्वतंत्रता होती है।
- **दोहरी जिम्मेदारी: अधिक महिलाओं के कार्यबल में शामिल होने** के कारण, एकल परिवार अक्सर दोहरी आय पारिवारिक व्यवस्था पर निर्भर हो जाते हैं। इससे महिलाओं को **पारंपरिक रूप से स्थापित घरेलू कर्तव्यों और देखभाल की जिम्मेदारियों के साथ-साथ पेशेवर जिम्मेदारियों को भी निभाना** पड़ता है।
  - इससे तनाव, थकान, स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं तथा मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक थकावट की स्थिति पैदा हो सकती है।
- **आर्थिक अवसर:** परिवारों में प्राधिकार की बदलती प्रकृति में, महिलाओं को **उच्चतर शिक्षा और कौशल विकास के लिए संसाधनों तक** बेहतर पहुंच प्राप्त हुई है। इससे उनके लिए रोजगार की संभावनाओं में वृद्धि हुई है और उन्हें वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त हुई है।
- **लैंगिक भूमिकाओं को फिर से परिभाषित करना:** एकल परिवारों या गैर-पारंपरिक पारिवारिक व्यवस्था में महिलाएं अक्सर अपनी आर्थिक भागीदारी और घर के भीतर निर्णय लेने में अपनी भूमिका के जरिए **पारंपरिक लैंगिक मानदंडों को चुनौती** देती हैं।
  - **घरेलू जिम्मेदारियां भी तेजी से अपने पार्टनर के साथ साझा** की जा रही हैं।
- **समाजीकरण:** संयुक्त परिवार प्रणाली में गिरावट आने से महिलाओं की समर्थन प्रणाली और सामाजिक नेटवर्क प्रभावित हुए हैं। गैर-पारंपरिक पारिवारिक व्यवस्था, विशेषकर **सिंगल मदर वाले परिवारों की बढ़ती संख्या, इस संबंध में अतिरिक्त चुनौतियां** प्रस्तुत करती है।
- **देखभाल का बोझ:** एकल परिवारों में, महिलाओं को बच्चों और बुजुर्गों दोनों की देखभाल की प्राथमिक जिम्मेदारी उठानी पड़ती है। भारत में वृद्धजनों की बढ़ती आबादी और परिवारों की बदलती प्रकृति के साथ, यह आगे भी एक महत्वपूर्ण चुनौती बनी रहेगी।

5.2. ट्रांसजेंडर्स पर प्रभाव

- **समाज में खुल कर सामने आना:** विशेष रूप से शहरी समाजों में परिवारों के बदलते स्वभाव के कारण ट्रांसजेंडर समुदाय समाज में खुल कर सामने आ रहे हैं और समाज में उनकी स्वीकार्यता भी बढ़ रही है।
  - हालांकि, पारिवारिक संरचना में आ रहे बदलाव की तुलना में **उन्हें मान्यता और उन्हें समाज में स्वीकार करने की गति धीमी** बनी हुई है।
- **व्यक्तिगत पहचान:** पारंपरिक भारतीय पारिवारिक व्यवस्था में, ट्रांसजेंडरों के लिए अपनी वास्तविक व्यक्तिगत पहचान प्रकट करना कठिन होता है तथा वे मानसिक तनाव, चिंता और अवसाद का सामना करते हैं।
- **लैंगिक मानदंडों की अपेक्षाएं:** ट्रांसजेंडर समुदायों को अनोखी और जटिल समस्याओं का सामना करना पड़ता है। दरअसल वे लैंगिक पहचान संबंधी सांस्कृतिक अपेक्षाओं के संगत नहीं होते हैं। इस तरह की लैंगिक मानदंड संबंधी अपेक्षाएं अधिकांशतः परिवारों का हिस्सा होती हैं और इनमें बदलाव कम ही होता है।
- **सामाजिक सहयोग:** पारंपरिक परिवारों में बचपन के कटु अनुभवों के परिणामस्वरूप ट्रांसजेंडर समुदायों में **सामाजिक अलगाव** की भावना बढ़ती है तथा **आत्म-सम्मान की भावना और स्वाभिमान में कमी** आती है। ऐसे में वे उन्हें मदद देने वाले परिवारों, LGBTQIA+ सामुदायिक संगठनों आदि से सहायता मांगते हैं।
- **नीतिगत सहायता:** हालांकि सुप्रीम कोर्ट के निर्णयों और **ट्रांसजेंडर व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 2019** पारित किए जाने के बाद से ट्रांसजेंडर अधिकारों को मान्यता दी गई है। साथ ही, उन्हें भारतीय समाज में संसाधनों, शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल तक बेहतर पहुंच प्राप्त हुई है।

5.3. बच्चों पर प्रभाव

- **अपनी पहचान बनाना:** एकल परिवारों के बच्चों में अक्सर **अपनी व्यक्तिगत पहचान बनाने तथा स्वायत्तता प्राप्त करने की एक मजबूत भावना** विकसित होती है। जबकि संयुक्त परिवारों में, वे अपनी **विस्तारित पारिवारिक विरासत और परंपराओं के साथ गहरा संबंध विकसित** करते हैं।
- **सामाजिक सहयोग:** छोटे परिवारों में, बच्चों को **भावनात्मक और सामाजिक सहयोग कम** मिल पाता है। दरअसल यह सहयोग विस्तारित पारिवारिक संबंधों से मिलता है। इससे उनके कल्याण और सामाजिक विकास पर प्रभाव पड़ता है।
- **सिंगल पैरेंट वाले परिवार:** अलगाव में वृद्धि होने और तलाक के बढ़ते मामलों के परिणामस्वरूप सिंगल पैरेंट वाले परिवारों की संख्या में बढ़ोतरी हो रही है। इससे बच्चों का कल्याण प्रभावित होता है।
- **सांस्कृतिक पहचान:** आधुनिक परिवार प्रणालियों में बच्चे अक्सर अपनी सांस्कृतिक विरासत से अलग हो जाते हैं।

बॉक्स 5.1. भारत की पारिवारिक संरचना पर कोविड का क्या प्रभाव पड़ा है?

व्यापक अनुसंधानों से पता चलता है कि कोविड-19 का कई देशों में **पारिवारिक कामकाज और कल्याण पर गहरा प्रभाव पड़ा है। कोविड-19 के व्यापक प्रभाव निम्नलिखित रूप में देखे जा सकते हैं:**

- पारिवारिक संबंधों पर प्रभाव: कोविड-19 के कारण होने वाली मौतों, इससे जुड़े स्वास्थ्य संबंधी जोखिमों और वित्तीय हानि के कारण असंख्य परिवारों को नुकसान हुआ है।
    - परिवारों को स्कूल और डे-केयर का बंद होना, प्रौद्योगिकी तक पहुंच में कमी, दूसरी जगह रहने वाले परिवार के सदस्यों के साथ संपर्क टूटने तथा विशेष रूप से महिलाओं व बच्चों पर बढ़ते दबाव जैसी अन्य चुनौतियों का सामना करना पड़ा है।
    - मौजूदा वित्तीय और सामाजिक दबाव के कारण कुछ रिश्ते कमजोर हो गए हैं। यह विशेष रूप से महिलाओं के साथ अपमानजनक संबंधों के रूप में सामने आया है।
    - हालांकि, आवाजाही से संबंधित बाधाओं और आरोपित प्रतिबंधों के कारण, कई परिवारों ने एक नया भावनात्मक और सामाजिक संबंध निर्मित किया है। इससे एक साथ रहने की सभावनाएं बढ़ी हैं
- **असंगत प्रभाव:** महामारी के कारण निम्न-आय वाले परिवारों तथा नृजातीय अल्पसंख्यकों और कमजोर वर्गों के परिवारों व महिलाओं पर असमान रूप से प्रभाव पड़ा है।
- **वित्तीय दबाव:** कोविड-19 की वजह से बेरोजगारी और स्वास्थ्य संबंधी व्यय में हुई वृद्धि के कारण उत्पन्न वित्तीय प्रभाव से पारिवारिक रिश्तों में तनाव पैदा हुआ है। हालांकि, यह प्रभाव काफी हद तक रिश्तों की गुणवत्ता और कोविड-19 से पहले उन परिवारों के आर्थिक स्तर पर निर्भर करता है।
- **पारिवारिक कार्यों का पुनर्वितरण:** कोविड-19 के शुरुआती चरणों में पारिश्रमिक वाले नियोजनों में लैंगिक असमानता में कमी, बच्चों की देखभाल व कुछ हद तक घरेलू कार्यों में पति व पत्नी द्वारा समन्वय आदि मामले दिखाई दिए थे।

6. भारत में पारिवारिक संरचना को आकार देने में शासन प्रणालियों की भूमिका

- **कानून और नीतियां:** अलग-अलग कानूनों और नीतियों ने पारिवारिक संरचना को अनेक तरीकों से प्रभावित किया है।
    - **जनसांख्यिकीय परिवर्तन:** भारत में प्रजनन दर और मृत्यु दर में हुई गिरावट के लिए प्रमुख रूप से नीतिगत प्रयास जिम्मेदार हैं। इसमें स्वास्थ्य और परिवार नियोजन संबंधी नीतियां प्रमुख हैं।
    - **आर्थिक अवसर:** कामगारों के लाभ के लिए विविध श्रम कानून जैसे- भारतीय कामगार मुआवजा अधिनियम (1923), न्यूनतम वेतन अधिनियम 1948 आदि लागू किए गए हैं। इससे आर्थिक सहायता के लिए परिवार के सदस्यों की संयुक्त परिवार पर निर्भरता को कम करने में मदद मिली है।
    - **विवाहों की आयु में परिवर्तन:** बाल विवाह पर रोक लगाई गई है और विधवा पुनर्विवाह के प्रावधान के साथ लड़के व लड़कियों दोनों के लिए विवाह की न्यूनतम आयु निर्धारित की गई है।
    - **पारिवारिक विरासत:** हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम, 1956 के तहत पुत्र और पुत्री दोनों को पिता की संपत्ति में समान अधिकार दिया गया है।
- **सामाजिक कल्याण कार्यक्रम:** सामाजिक कल्याण से जुड़े सरकारी कार्यक्रमों का पारिवारिक संरचना पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। इन कार्यक्रमों में मुख्य रूप से गरीबी उन्मूलन, स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा से जुड़े कार्यक्रम शामिल हैं।
    - **शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं तक** बेहतर पहुंच के कारण परिवार का आकार छोटा हुआ है। दरअसल वर्तमान में परिवार बच्चों की संख्या की तुलना में बच्चों के जीवन की गुणवत्ता को अधिक प्राथमिकता दे रहे हैं।
    - **सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम** बुजुर्गों की देखभाल के साधन प्रदान करते हैं और इस प्रकार छोटे परिवारों को सामाजिक कामकाज के लिए एक व्यवहार्य इकाई बनाते हैं।
- **शहरीकरण और औद्योगीकरण:** शहरीकरण और औद्योगीकरण के पीछे नीतियां वे प्रमुख प्रेरक शक्ति हैं, जिनके कारण पारिवारिक संरचना में महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं।
    - **शहरीकरण और औद्योगीकरण के कारण प्रवासन एवं आर्थिक अवसरों** के परिणामस्वरूप परिवार का आकार छोटा हुआ है। कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है और वे पारंपरिक पारिवारिक प्राधिकार के प्रभाव से मुक्त हुई हैं।
- **लैंगिक समानता:** दहेज, घरेलू हिंसा और बाल विवाह के खिलाफ बनाए गए कानूनों जैसे विधिक सुधारों के जरिए लैंगिक समानता को बढ़ावा देने का प्रयास किया गया है। इसने पारंपरिक पितृसत्तात्मक मानदंडों को चुनौती दी है तथा महिलाओं को विवाह, परिवार और करियर का स्वतंत्र रूप से चयन करने के लिए सशक्त बनाया है।

बॉक्स 6.1. परिवार नियोजन के प्रभाव

परिवार नियोजन के प्रभाव

लोग
- SDG 1. गरीबी का अंत
- SDG 2. भुखमरी का अंत
- SDG 3. अच्छा स्वास्थ्य
- SDG 4. गुणवत्तापूर्ण शिक्षा
- SDG 5. लैंगिक समानता

ग्रह (पृथ्वी)
- SDG 6. स्वच्छ जल और साफ़-सफाई
- SDG 7. वहनीय एवं स्वच्छ ऊर्जा
- SDG 9. नवाचार और अवसंरचना
- SDG 11. संधारणीय शहर और समुदाय
- SDG 12. जिम्मेदारीपूर्ण उपभोग
- SDG 13. जलवायु कार्रवाई
- SDG 14. जल के नीचे जीवन
- SDG 15. भूमि पर जीवन

समृद्धि
- SDG 8. बेहतर कार्यदशाएं और आर्थिक संवृद्धि

शांति
- SDG 10. असमानता में कमी
- SDG 16. शांति और न्याय

साझेदारी
- SDG 17. लक्ष्य प्राप्ति के लिए सामूहिक साझेदारी

7. आगे की राह

- **लैंगिक समानता को बढ़ावा देना:** आवश्यक नीतियां बनाकर और कानूनी मदद के जरिए लैंगिक समानता को बढ़ावा देने की दिशा में प्रयास जारी रखने चाहिए। साथ ही, लैंगिक भूमिकाओं को फिर से परिभाषित करना चाहिए।
  - इन प्रयासों में दहेज, घरेलू हिंसा और बाल विवाह के खिलाफ कानूनों का प्रभावी कार्यान्वयन तथा महिलाओं की आर्थिक भागीदारी को बढ़ावा देने वाले कानून शामिल हैं।
- **हाशिए पर रहने वाले समूहों की मदद करना:** ट्रांसजेंडरों सहित हाशिए पर रहने वाले वर्गों के समावेश और कल्याण को बढ़ावा देना चाहिए। इसके लिए लक्षित सामाजिक कल्याण कार्यक्रम तथा शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और सामुदायिक सहायता नेटवर्क तक पहुंच जैसे उपाय करने चाहिए।
- **प्रभावी परिवार नियोजन:** परिवार नियोजन कार्यक्रमों में देखभाल की जिम्मेदारियों के लिए संसाधन और सहायता; काम-काजी महिलाओं के लिए क्रेच सुविधाएं और पारिवारिक विवादों को हल करने के लिए परामर्श को बढ़ावा देना शामिल होने चाहिए।
- **सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को कम करना:** इनमें आय की असमानता को कम करने, बुनियादी सुविधाओं तक पहुंच में सुधार करने और समाज के हर वर्ग के लिए अवसर पैदा करने वाली नीतियां शामिल की जा सकती हैं।
- **बुजुर्गों की देखभाल:** बुजुर्ग आबादी से संबंधित देखभाल के पहलुओं पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। परिवार, सरकार और नागरिक समाज जैसे प्रमुख हितधारकों को उनकी देखभाल के लिए एक मजबूत तंत्र बनाने हेतु आगे आना चाहिए।
- **प्रौद्योगिकी का जिम्मेदारीपूर्ण उपयोग:** प्रौद्योगिकी का जिम्मेदारी से उपयोग करना तथा ऑनलाइन और ऑफलाइन माध्यम से अंतर्क्रियाओं के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है।
  - प्रौद्योगिकी के अत्यधिक उपयोग के संभावित जोखिमों के बारे में परिवारों को शिक्षित करना चाहिए। साथ ही, स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर स्क्रीन पर समय बिताने की आदतों को बढ़ावा देने से नकारात्मक प्रभावों को कम करने में मदद मिलेगी।
- **सांस्कृतिक शिक्षा:** सरकार/ शिक्षा निकाय/ नागरिक समाज के लोग भारतीय सांस्कृतिक विरासत के बारे में ज्ञान के प्रसार के लिए अभियान चला सकते हैं, ताकि बच्चे और परिवार अपनी विरासत से जुड़ सकें।

निष्कर्ष

पारंपरिक संयुक्त परिवार आधारित प्रणाली से लेकर एकल और गैर-पारंपरिक पारिवारिक व्यवस्था के बढ़ते प्रचलन तक, भारतीय परिवार प्रणाली में पिछले कुछ वर्षों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। ये परिवर्तन औद्योगीकरण, शहरीकरण व वैश्वीकरण तथा अन्य कारकों के बीच विकसित हो रहे शासन संबंधी फ्रेमवर्क से प्रेरित हैं। जैसे-जैसे परिवार इन परिवर्तनों को अपनाते हैं, उन्हें अवसरों और चुनौतियों दोनों का सामना करना पड़ता है। खुले संचार को बढ़ावा देकर, सीमाएं निर्धारित करके और एक साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिताने को प्राथमिकता देकर, परिवार मजबूत संबंध व सहयोग आधारित नेटवर्क बनाए रखते हुए इन परिवर्तनों एवं अवसरों का लाभ उठा सकते हैं।

> **किसी राष्ट्र की ताकत उसके परिवारों की एकजुटता से प्राप्त होती है।**
>
> -कन्फ्यूशियस

टॉपिक: एक नज़र में

भारत में पारिवारिक संरचना का बदलता स्वरूप

- परिवार आमतौर पर "अपने जीवनकाल के महत्वपूर्ण चरणों के दौरान **एक साथ रहने वाले** और **जैविक और/ या सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक संबंधों** के जरिए एक-दूसरे से जुड़े हुए व्यक्तियों के समूह" को दर्शाता है।

भारतीय परिवार प्रणाली

- भारत में ऐतिहासिक दृष्टि से पारंपरिक, आदर्श एवं वांछित परिवार का स्वरूप **संयुक्त परिवार** ही है।
- जनगणना के अनुसार, **एकल परिवार कुल परिवारों का 70% हिस्सा** है।
- आम तौर पर, **परिवार पितृसत्तात्मक विचारधारा पर आधारित होते हैं और पितृवंशीय नियम का पालन करते हैं।**
- पारंपरिक परिवार प्रायः **पारंपरिक लैंगिक भूमिका आधारित प्राथमिकताओं का समर्थन करते हैं।** इसमें महिलाओं की भूमिका घर तक ही सीमित रहती है।
- अंतर्विवाह का अधिक प्रचलन तथा **एक ही जाति में विवाह** करने का सामान्य नियम।

परिवर्तन के कारक

- **औद्योगीकरण और शहरीकरण** के परिणामस्वरूप शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन हुआ है और एकल परिवारों के प्रचलन में वृद्धि हुई है।
- **पश्चिमीकरण** के कारण व्यक्तिगत परिवारों की संख्या में वृद्धि हुई है। घर के मुखिया के पारंपरिक अधिकारों में कमी आई है और गैर-पारंपरिक संबंधों को स्वीकार किया गया है।
- **सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता** से घर के सदस्यों की लैंगिक भूमिकाओं में बदलाव हुआ है। साथ ही व्यक्तिवाद की भावना विकसित हुई है।
- **वैश्वीकरण** के कारण उपभोक्तावादी संस्कृति में वृद्धि हुई है। पारिवारिक बंधन कमजोर हुए हैं और पुरानी पीढ़ियों पर निर्भरता का बोझ बढ़ा है।
- **प्रौद्योगिकी** के विकास के कारण परिवार के सदस्यों के साथ त्वरित संपर्क संभव हुआ है। साथ ही यह पारंपरिक संपर्क को बाधित करती है और संघर्षों को बढ़ावा देती है।

हाशिए पर रहने वाले लोगों पर बदलते पारिवारिक ढांचे का प्रभाव

- **महिलाएं:** स्वायत्तता में वृद्धि और दोहरी ज़िम्मेदारियों का दबाव, बेहतर आर्थिक अवसर और सामाजिक गतिशीलता तथा लैंगिक भूमिकाओं में बदलाव किया गया है।
- **ट्रांसजेंडर:** समाज में खुल कर सामने आने और स्वीकार्यता बढ़ने, लैंगिक मानदंड संबंधी अपेक्षाएं, व्यक्तिगत पहचान के निर्माण और अधिकारों की मान्यता में कठिनाइयां उत्पन्न होती हैं।
- **बच्चे:** व्यक्तिगत पहचान और स्वायत्तता की मजबूत भावना, सामाजिक सहयोग की कमी, एकल-अभिभावक वाले परिवारों की चुनौतियां और सांस्कृतिक पहचान की कमी।

भारत में पारिवारिक संरचना में परिवर्तन

- पारंपरिक संयुक्त परिवार प्रणाली का लगभग लुप्त होना और **एकल परिवारों की संख्या में वृद्धि।**
- **महिला मुखिया वाले परिवारों** के अनुपात में वृद्धि हुई है।
- **तलाक के मामलों** में वृद्धि, अरेंज मैरिज की संख्या में कमी और **विवाह की औसत आयु में वृद्धि** हुई है।
- नातेदारी के संबंध सीमित हुए हैं और घरों में **सलाह-मशविरा से फैसले लेने की प्रवृत्ति** बढ़ी है।
- पहली बार गर्भधारण करने की आयु में वृद्धि होने के साथ-साथ **कुल प्रजनन दर में कमी आई** है।
- **बालिकाओं की स्वीकार्यता में वृद्धि** हुई और **आर्थिक गतिविधियों** में उनकी भूमिका भी बढ़ रही है

भारत में पारिवारिक संरचना को बदलने में शासन प्रणालियों की भूमिका

- **कानून और नीतियां** जनसांख्यिकीय परिवर्तन को प्रेरित करती हैं। यह आर्थिक अवसर प्रदान करता है और वैवाहिक परिवर्तन को बढ़ावा देती है। साथ ही यह विरासत संबंधी अधिकार प्रदान करती है।
- **सामाजिक कल्याण कार्यक्रम** सामाजिक-आर्थिक संकेतकों में सुधार करते हैं। इससे छोटे परिवार समाज की व्यवहार्य इकाइयां बन जाते हैं।
- **शहरीकरण और औद्योगीकरण को बढ़ावा देने वाली नीतियों** के परिणामस्वरूप कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है और वे पारंपरिक निर्णयन प्रक्रिया से मुक्त हो रही हैं।
- **लैंगिक समानता** को बढ़ावा देने के प्रयास पारंपरिक पितृसत्तात्मक मानदंडों को चुनौती देते हैं।

आगे की राह

- **लैंगिक समानता को बढ़ावा देने और लैंगिक भूमिकाओं में बदलाव** लाने की दिशा में प्रयास किए जाने चाहिए।
- लक्षित सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों के जरिए ट्रांसजेंडरों सहित **हाशिए पर मौजूद वर्गों के समावेश और कल्याण** को बढ़ावा देना चाहिए।
- **परिवार नियोजन कार्यक्रमों** में देखभाल की जिम्मेदारियों, क्रेच सुविधाओं और परामर्श सुविधाओं के लिए संसाधन और सहायता को शामिल किया जाना चाहिए।
- सक्षम नीतियों के माध्यम से **सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को कम करना** चाहिए।
- **प्रौद्योगिकी का जिम्मेदारी से उपयोग करना** तथा ऑनलाइन और ऑफलाइन माध्यम से संपर्क के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है।
- **भारतीय सांस्कृतिक विरासत के बारे में ज्ञान** का प्रसार करने के लिए अभियान शुरू किए जाने चाहिए।

बॉक्स, चित्र और टेबल

बॉक्स 2.1 भारतीय परिवार व्यवस्था 2
बॉक्स 4.1. एक छोटी सी वार्ता! पारिवारिक संरचना पर सोशल मीडिया का प्रभाव 5
बॉक्स 5.1. भारत की पारिवारिक संरचना पर कोविड का क्या प्रभाव पड़ा है? 7
बॉक्स 6.1 परिवार नियोजन के प्रभाव 8
चित्र 4.1 परिवर्तन के कारक 4
टेबल 3.1. भारत में पारिवारिक संरचना में आए विविध परिवर्तन 3

39 in Top 50 Selection in CSE 2022
1 AIR ISHITA KISHORE
2 AIR GARIMA LOHIA
3 AIR UMA HARATHI N

हिंदी माध्यम में 40+ चयन CSE 2022 में
हिंदी माध्यम टॉपर
66 AIR KRITIKA MISHRA
85 AIR BHARAT JAI PRAKASH MEENA
105 AIR DIVYA
120 AIR GAGAN SINGH MEENA
173 AIR ANKIT KUMAR JAIN

8 in Top 10 Selection in CSE 2021
2 AIR ANKITA AGARWAL
3 AIR GAMINI SINGLA
4 AIR AISHWARYA VERMA
5 AIR UTKARSH DWIVEDI
6 AIR YAKSH CHAUDHARY
7 AIR SAMYAK S JAIN
8 AIR ISHITA RATHI
9 AIR PREETAM KUMAR

दिल्ली
HEAD OFFICE
Apsara Arcade, 1/8-B, 1st Floor, Near Gate-6, Karol Bagh Metro Station, Delhi

MUKHERJEE NAGAR CENTRE
Plot No. 857, Ground Floor, Mukherjee Nagar, Opposite Punjab & Sindh Bank, Mukherjee Nagar, Delhi

FOR DETAILED ENQUIRY
Please Call:
+91 8468022022,
+91 9019066066

1 AIR SHUBHAM KUMAR
CIVIL SERVICES EXAMINATION 2020

ENQUIRY@VISIONIAS.IN /VISION_IAS WWW.VISIONIAS.IN /C/VISIONIASDELHI VISION_IAS /VISIONIAS_UPSC

अहमदाबाद बेंगलूरु भोपाल चंडीगढ़ गुवाहाटी हैदराबाद जयपुर जोधपुर लखनऊ प्रयागराज पुणे राँची